6

शाला में बाल साहित्य का उपयोग

भगवती प्रसाद गेहलोत*

बाल साहित्य नन्हे पाठकों के ज्ञान क्षेत्र में विस्तार का एक अच्छा माध्यम है, इससे बच्चों को नित नयी-नयी जानकारियाँ मिलती हैं और उनकी सूझ-बूझ में वृद्धि होती है। जब बाल साहित्य इतना उपयोगी है, तो अध्यापक एवं स्कूल प्रशासन को भी इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि कैसे शाला में बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए बाल साहित्य का उपयोग करें, जिससे बच्चे किताबों से अधिक से अधिक सूचना ग्रहण कर उसका वास्तविक जिंदगी में उपयोग करें। जानने के लिए पढ़िए यह लेख...

प्रारंभिक शिक्षा में सीखने के प्रति बच्चे में रुचि जाग्रत करने के लिए कक्षा में बाल साहित्य के उपयोग का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शाला में आने, कक्षा-कक्ष में बैठने, स्वतंत्र रूप से पढ़ने, दोस्तों से चर्चा करने, दोस्तों के बीच बैठकर बाल साहित्य में से कुछ बताने, आपस में पूछकर उठी हुई समस्या का समाधान करने जैसी दक्षता का विकास बाल साहित्य के उपयोग से सरलता से किया जा सकता है। बाल साहित्य बाल केंद्रित शिक्षण की भूमिका अदा कर सकता है। यदि शिक्षक नित-नवीन रोचक बाल साहित्य कक्षा के कोने में रखते रहें तो बाल साहित्य स्व-अधिगम एवं आंगिक हाव-भाव से युक्त अभिव्यक्ति दक्षता का विकास करने में स्वयमेव उपयोगी है।

शाला में बाल साहित्य के स्थान की व्यवस्था

शाला में इसकी व्यवस्था निम्न प्रकार से की जा सकती है-

1. **बाल पुस्तकालय कोना**-कक्षा-कक्ष के एक कोने में दीवार में छात्रों की पहुँच की ऊँचाई के अनुसार फर्सियाँ लगाई जा सकती हैं (कम से कम दो) जिस पर बाल साहित्य विभाजित कर रखा जाता रहे, जिसे हम बाल पुस्तकालय कॉर्नर का नाम दे सकते हैं।
2. **भित्ती पुस्तकालय**-कक्षा-कक्ष की दीवार में कम-से-कम पाँच या सात फिट लंबी सुतली या प्लास्टिक की पतली रस्सी दो खूँटियों के सिरे पर बाँधकर बाल साहित्य

* *व्याख्याता*, डायट मंदसौर, जी-3 बी.टी.आय कालोनी, मंदसौर, मध्यप्रदेश-458801

को टाँकने की व्यवस्था की जा सकती है, ताकि बच्चे जब भी अवसर मिले, स्वतंत्र रूप से उसका उपयोग कर सकें।

3. **अलमारी या रैक** - प्रधानाध्यापक-सह-शिक्षक बैठक कक्ष में खुली अलमारी रख अथवा रैक को रख उसमें बाल साहित्य संबंधी पुस्तकों का खंड और बाल साहित्य पत्र पत्रिका खंड बनाकर या निर्धारित कर रखा जा सकता है।
4. **समुदाय का सहयोग** - संसाधनों की व्यवस्था के लिए शाला में बजट या राशि उपलब्ध न हो तो शाला प्रबंधन समिति को अथवा समाज समुदाय के सहयोगी प्रवृत्ति वाले लोगों को चिह्नांकित कर उन्हें प्रेरित कर अलमारी या रैक के लिए सहयोग लिया जा सकता है। संसाधन भंडार पत्रिका में उल्लेख के साथ दर्ज किए जाएँ।

शाला में बाल साहित्य का प्रबंध

शाला में बाल साहित्य का प्रबंध इस प्रकार किया जा सकता है-

1. शासन की ओर से प्रदाय होने वाली पुस्तकों में से बाल साहित्य को अलग छाँटकर बच्चों के लिए उपलब्धता सुनिश्चित करें।
2. विभिन्न प्रकाशनों से निकलने वाली बाल पत्रिकाओं को खरीद कर या शाला को वार्षिक सदस्य बनाकर व्यवस्था की जा सकती है जिसमें वैज्ञानिक मनोरंजन के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण व नैतिक मूल्य का विकास करने वाली पत्रिकाएँ भी हों।
3. विभिन्न समाचार पत्रों में साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक निकलने वाली बाल पत्रिका या साहित्य को इकट्ठा करते रहकर छात्रों के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है। बच्चों के घर आने वाले समाचार पत्र के साथ आने वाले बाल साहित्य को अभिभावकों से पूछकर मँगवाते रहा जा सकता है।
4. शिक्षक खुद भी अपने परिचितों से या अपने यहाँ आने वाले समाचार पत्रों के बाल साहित्य परिशिष्ट से इस प्रकार का साहित्य संग्रह कर सकता है। मँगाने वाला पढ़ ले या उपयोग कर ले, उसके दो-तीन दिन बाद तो वह दे ही सकता है।

कुल मिलाकर बात यही है कि शिक्षक मन से सुविधानुसार इसे एकत्रित कर सकता है। कक्षा में सुतली पर टाँगता रहे या कोने में रखता रहे। नया साहित्य मिलने पर पुराना हटा दे, नया रखता रहे, तभी रुचिकर शिक्षण में छात्रों का ध्यान खींचने में सफल होगा। आवश्यकता होने पर कंटिजेंसी राशि का कुछ उपयोग इसमें किया जा सकता है।

बाल साहित्य का उपयोग कैसे करें —

प्रतिवर्ष नवीन सत्र प्रारंभ होने व प्रवेश प्रक्रिया निश्चित हो जाने के बाद प्रार्थना के समय बैठाकर या प्रथम बालसभा में सभी छात्रों को बाल पुस्तकालय उपयोग करने का मार्गदर्शन करें, उन्हें समझाएँ यथा सभी बच्चों के लिए अपनी-अपनी कक्षा में कोर्स की किताब के अलावा अच्छी-अच्छी किताबें, नयी-नयी पत्रिकाएँ रखी रहेंगी या डोरी पर टँगी रहेंगी।

आप जब भी फुरसत में रहें या आपके शिक्षक कहें तब उन्हें भी पढ़ सकते हैं। जो कहानी या बात आपको अच्छी लगे बालसभा में भी सुना सकते हैं या अपनी कक्षा में भी सुना सकते हैं। उसमें कहीं बिंदु जोड़कर चित्र बनाने का हो या रेखा खींचकर चित्र बनाने का हो, रास्ता ढूँढ़ने जैसी पहेली हो तो पेंसिल का उपयोग कर आप उस काम को कर सकते हैं। इसमें रबर का उपयोग भी आप कर सकते हैं। चित्रों में अंतर ढूँढो, गलती ढूँढो, शब्दार्थ बताओ, सही हल खोजो, पहेली पूर्ति करो आदि कार्य कर सकते हो।

प्रार्थना के समय प्रतिदिन जिस छात्र-छात्रा का क्रम आए वह बाल साहित्य में से पढ़ी विषयवस्तु प्रतिदिन बारी-बारी से सुनाएगा। यदि याद न रहे तो पत्रिका या पुस्तक में से देखकर भी सुना सकते हैं। इसमें कहानी, कविता, विज्ञान के अविष्कार, बोधकथा, सूक्तियाँ, शब्दार्थ, प्रश्नोत्तर आदि हो सकते हैं।

पुस्तक/पत्र-पत्रिका को व्यवस्थित तरीके से उतारें और वहाँ रखे रजिस्टर में नाम लिख सकें तो लिख दें कि कौन-सी पत्रिका ली या नहीं फिर अपने दोस्त से नाम लिखने के लिए कह दें। उसे जब रखना हो तो व्यवस्थित रखें, इस प्रकार से शिक्षक छात्रों को मार्गदर्शन दे सकते हैं।

बाल साहित्य के उपयोग के संबंध में शिक्षक की भूमिका

1. बाल साहित्य कक्षा में रखना सुनिश्चित करना, बाल साहित्य जुटाना, उपयोग के लिए निर्देश देना, उपयोग का अभिलेख रखना, संभव हो तो एक पंजिका जिसमें क्रमाँक, छात्र का नाम, दिनाँक व पत्रिका का नाम व वापस रखने का दिनाँक अंकित हो, रखी जा सकती है। कक्षा प्रतिनिधि या समिति बनाकर बारी-बारी से छात्रों को साप्ताहिक काम सौंपा जा सकता है। पंजिका में नाम लिखने के लिए छात्रों को समझा दें।
2. बाल साहित्य का उपयोग करने वाले/उपयोग कर बताने वाले छात्रों को शिक्षक शाबाशी दें, उनकी पीठ थपथपाएँ, सबके सामने उनकी प्रशंसा करें।
3. शिक्षक समय-समय पर अवलोकन भी करता रहे कि किस प्रकार के बाल साहित्य का बच्चे ज्यादा उपयोग कर रहे हैं।
4. बाल साहित्य में दी गई गतिविधि का उपयोग शिक्षक खेल के कालखंड में कर सकते हैं।
5. बाल साहित्य पढ़ने वाले छात्रों से चर्चा के दौरान छात्र में पूर्व में विद्यमान (प्रवेशीय दक्षता/पूर्व ज्ञान) दक्षताओं को ध्यान में रखकर पढ़ी गई कहानी या विषय वस्तु से हिंदी, गणित, पर्यावरण, अंग्रेजी, सामाजिक अध्ययन, सामान्य ज्ञान आदि के सामान्य प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयत्न करें। किसी भी विषयवस्तु से उपरोक्त विषयों से संबंधित सरल प्रश्न आसानी से बनाए जा सकते हैं। इसके लिए ज़रूरी है कि शिक्षक भी सरसरी तौर पर दिए जाने वाले बाल साहित्य पर निगाह दौड़ा लें।
6. प्रार्थना के समय प्रतिदिन पाँच मिनट का समय अभिव्यक्ति कौशल के लिए

निर्धारित करें तथा शिक्षक उपस्थित पंजिका से कक्षावार बारी-बारी से प्रतिदिन दो छात्र-छात्रा का क्रम इस बात के लिए निर्धारित करें कि आगामी दिवस पर कौन अभिव्यक्त करेगा ताकि छात्र पढ़े गए बाल साहित्य को नि:संकोच सुना सके/या पढ़कर बता सके। जिस दिन कोई तैयारी करके न सुना सके उस दिन उदाहरण के तौर पर शिक्षक सुनाए कि उसने यह पढ़ा था।

7. शिक्षक पुस्तकालय कोने में स्लेट-पेंसिल, कलर पेंसिल, छोटी-बड़ी स्केल, कोरे कागज आदि रखे तथा उनका उपयोग कब कैसे करना है यह समझा दे, ताकि आवश्यकता पड़ने पर छात्र उसका उपयोग कर सकें।
8. शिक्षक विभिन्न विषयों के निर्धारित अधिगम क्षेत्रों/दक्षताओं का अध्ययन कर बाल साहित्य से समन्वय बैठाकर स्व-अधिगम व प्रश्न चर्चा के माध्यम से शिक्षण को प्राथमिकता दे तो पाठ्यक्रम के बहुत सारे अंशों की पूर्ति बाल साहित्य के स्वतंत्र पठन से हो सकती है, ज़रूरत है नज़रिया बनाने की।
9. विभिन्न विषयों की पाठ्यवस्तु के शिक्षण के पश्चात् अनुप्रयोग के लिए शिक्षक बाल साहित्य का भरपूर उपयोग करवा सकता है।

नित नयी जानकारी शीघ्र प्राप्त करने की सुविधा वाले इस वैज्ञानिक युग में छात्र भी जिज्ञासु रहता है। पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु अच्छी होने के बावजूद छात्र नयी लायी गई, टाँगी गई बाल पत्रिका को देखने के लिए ज़्यादा उत्साहित रहते हैं। पाठ्यपुस्तक तो उसके पास वर्ष भर रखी रहने व पढ़ी जाने वाली होती है। उसे वह शिक्षक द्वारा पढ़ाई जाने वाली-सिखाई जाने वाली प्रक्रिया के रूप में देखता है तथा पढ़ाने-पढ़ने की बँधी बँधाई मानसिकता के रूप में लेता है। इसलिए हर सप्ताह कोई पत्रिका टँगी देखता है तो उसमें स्वयं रुचि लेता है। अत: यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षण में बाल साहित्य का उपयोग कर शिक्षण को रुचिकारक, गतिविधि केन्द्रित, आनंददायी, आकर्षक बनाकर लक्षित दक्षताओं की पूर्ति करने में सहयोगी बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से बच्चों में शैक्षणिक दृष्टिकोण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करवाई जा सकती है। ज़रूरत है सच्चे मन से बाल साहित्य के उपयोग की।

❑❑❑